अध्ययन सामग्री :-

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातक खण्ड - I

प्रश्नपत्र - द्वितीय (II)

(उपन्यास, नाटक एवं कहानी)

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा
मो० - 7091260073

'आकाशदीप' कहानी की समीक्षा।

लेखक - जयशंकर प्रसाद

Scanned with CamScanner

'आकाशदीप'
जयशंकर प्रसाद

'आकाश दीप' शीर्षक कहानी की समीक्षा।

उत्तर !— 'आकाश दीप' शीर्षक कहानी के कहानीकार हैं— जयशंकर प्रसाद जी। प्रसाद जी एक बहुमुखी प्रतिभा के सम्पन्न कलाकार हैं। वे एक कवि हैं, कहानीकार हैं, उपन्यासकार हैं, निबंध लेखक व इतिहास विद् हैं। प्रसाद की प्रायः सत्तर कहानियाँ हैं। बहुत कुछ उनके अन्तः काव्यरूपों की तरह असमान सा स्तर की है। इतिहास का संवेदनशील अध्येता होने के कारण अधिकतर अच्छी कहानियाँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर निर्मित हैं जैसे— 'आकाश दीप', ~~'पुरस्का'~~ 'पुरस्कार', 'सालवती'। प्रसाद की कहानियों में उनका कवि रूप मुखर है तो स्वाभाविक है, क्योंकि गद्य रचनाओं में भी वे अपने कवि रूप को नहीं भूल पाते। ~~'[illegible]'~~ प्रसादजी कथा-साहित्य में 'आकाश दीप', 'गुंडा', 'पुरस्कार' जैसी कहानियों के लिए हमेशा याद किये जाएंगे।

'आकाश दीप' प्रसाद जी की श्रेष्ठतम कहानियों में एक है। यह एक भाव तथा वीर रस से पूर्ण कहानी है। इस कहानी की नायिका का नाम चम्पा है। अपने पिता के मृत्यु के पश्चात् पोताध्यक्ष मणिभद्र द्वारा बंदिनी बना ली जाती है। उसी के साथ जलदस्यु बुद्धगुप्त ~~ब~~ भी बंदी है। संयोग से एक दिन चम्पा स्वयं मुक्त होकर बुद्धगुप्त को भी मुक्त कर देती है। बुद्धगुप्त ~~[illegible]~~ पोत से संबंधित नौका की रस्सी को काट देता है और नौका पर अधिकार कर लेता है। चम्पा अपने व्यक्तित्व से बुद्धगुप्त को प्रभावित करती है। उससे प्रेरणा पाकर बुद्धगुप्त जलमार्ग का डैकती ~~छोड़कक~~ छोड़कर व्यवसायी बन जाता है। उसके साहचर्य से चम्पा के भीतर की नारी जाग उठती है। वह बुद्धगुप्त से प्रेम करने लगती है। वास्तविकता यह है कि बुद्धगुप्त के प्रति प्रेम और घृणा दोनों भावों को वह पाल रही है। कारण कि

उसके पिता का हत्यारा है। फलस्वरूप बुद्धगुप्त के बहुत प्रयासों के बावजूद भी वह उसे पति रूप में स्वीकार नहीं कर पाती। बुद्धगुप्त अत्यधिक धन संपत्ति के साथ भारत लौट आता है, लेकिन चम्पा उसके साथ नहीं लौटती। वह आजीवन उस ~~स्तंभ~~ द्वीप स्तंभ में आकाशदीप जलाती रहती है। वह अपने प्रेमी की आतुल प्रतीक्षा करती रहती है।

कहानी का कथानक बहुत ही संक्षिप्त है। प्रसाद जी एक रोमांटिक कवि थे। उनके व्यक्तित्व में रोमांस की एक अद्भुत धारा प्रवाहित होती रहती थी। यही कारण है कि उनकी कहानियों में रोमांचकता, भावुकता एवं कल्पना की प्रधानता है। इस कहानी का वातावरण बड़े प्रभावपूर्ण ढंग से कहानीकार ने प्रस्तुत किया है। 'आकाशदीप' कहानी का प्रारंभ नाटकीय शैली में हुआ है। इसमें कथा तत्व के पाँचों उपकरण – आरंभ, विकास, कौतूहल, सीमा और अंतकाल समय का निर्वाह हुआ है।

चम्पा कहानी की नायिका है उसका व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षण एवं मधुर है उसमें सरलता, सहजता, स्निग्धता है। चम्पा कर्तव्य निष्ठा से पूर्ण बेटी है। ~~बाप~~ पिता के हत्यारे के साथ वह अपनी हथेली पीली नहीं कर सकती विवाह नहीं रचा सकती है। वह एक नारी है उसमें परिणय की गंगा प्रवाहित हो रही है। अतः बुद्धगुप्त से प्रेम करने लगती है वह प्रेम और कर्तव्य के अन्तर्द्वन्द्व के झूले पर झूलती रहती ~~र~~ है।

~~प्रसाद~~ कहानीकार का उद्देश्य है- चम्पा के मानस के अन्तर्द्वन्द्व को उजागर करना। चम्पा के व्यक्तित्व में कहानीकार ने दिखलाया है कि उसने कर्तव्य की वेदी पर अपने परिणय को अर्पित कर दिया। स्पष्टतः कहानी का उद्देश्य है जीवन का महत्व त्याग और सेवा में है और प्रेम की

Scanned with CamScanner

गरिमा चिर वियोग में। मानवीय भावनाओं को चित्रित करने में प्रसाद जी बड़े सफल कलाकार हैं।

इस प्रकार 'आकाश दीप' शीर्षक कहानी कथा-वस्तु, पात्र, युगधर्म, संवाद, भाषा-शैली और उद्देश्य सभी दृष्टियों से सफल है।

इस कहानी का शीर्षक बड़ा ही सजीव आकर्षण एवं छोटा है। प्रो० जगदीश पाण्डेय ने दो प्रकार के शीर्षक बतलाये हैं – मुकुट प्रधान एवं घुघंट प्रधान। उनके विभाजन के अनुसार यह मुकुट प्रधान शीर्षक है 'आकाश दीप' हमें आमंत्रित करता है कि इसमें आकाश दीप की चर्चा है। जब हम कहानी में प्रवेश करते हैं तो पाते हैं कि कहानी करते हैं तो पाते हैं कि कहानी की नायिका अपने चरित्र के अंतर्द्वन्द्व में कर्तव्य और प्रेम के झूले पर झूल रही है। कर्तव्य की विजय होती है एवं प्रेमी की आतुल प्रतिक्षा करती हुई उस स्तंभ पर आजीवन 'आकाश दीप' जलाती है।

Scanned with CamScanner